नमाज़े नबवी

नमाज़ का सहीह तरीक़ा

लेखक

अब्दुर्रहमान मोहम्मद उसमान अलउमरी

मरकज़ इब्ने तैमिया

मकतबा अलफहीम

मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

مکتبۃ الفہیم

مئوناتھ بھنجن یوپی

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े नबवी

नमाज़ का सहीह तरीक़ा

लेखक
अब्दुर्रहमान मुहम्मद उस्मान अल-उमरी

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.
مکتبۃ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

kafeelgraphics.blogspot.in

Www.IslamicBooks.Website

जुमला हक़ूक़ महफ़ूज़ हैं

पुस्तक का नाम	नमाज़े नबवी नमाज़ का सहीह तरीक़ा
लेखक	अब्दुर्रहमान मुहम्मद उस्मान अल-उमरी
डेज़ाईनिंग	कफील अहमद फैज़ी, मऊ
प्रकाशक	मकतबा अलफहीम मऊ
प्रकाशन वर्ष	मार्च 2015
प्रकाशन संख्या	तीन हज़ार एक सौ
पेज	48

मिलने का पता

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
faheembooks@gmail.com maktabaalfaheem 9889123129

अल-क़ुरआन पब्लिकेशन, श्रीनगर	पाकीज़ी बुकडिपो सब्ज़ी बाग़ पटना
सलफिया दावत सेन्टर फैथफुल गंज कानपूर	मक्तबा अल-सून्ना मुम्बई, 8097444448
उमरी बुक डिपो, कुरला मुम्बई9819961879	दकन ट्रेडर्स मुगल पुरा हैदराबाद
मक्तबा मआरिफ, मुम्बई 9833845651	सिद्दिक़ीया बुक डिपो,मुम्बई 9892730929
मक्तबा अल-एहसान नदवा रोड लखनऊ	दारैन बुक डिपो, नदवा रोड लखनऊ
मक्तबा शबाब , नदवा रोड लखनऊ	महफ़ूज़ बुक डिपो ,फतह मैदान मालेगावँ
खैर बुक डिपो, डोमरिया गंज यु पी	फेज़ी बुक डिपो टोली चौकी हैदराबाद
अमीन बुक सेन्टर, नौगढ़ 9044076565	सलफी इस्लामिक बुक्स मुम्बई 9220543191
हाफिज़ अब्दुल खालिक़ अलियावी नानडेड	कोहे नूर इन्टरप्राईज़ेज़, औरन्गाबाद

Www.IslamicBooks.Website

फेहरिस्त

न०	मज़ामीन	पे० न०	न०	मज़ामीन	पे० न०
1	अरकाने इस्लाम	4	15	अक़ामत के कलिमात	17
2	नमाज़ की रकअ़तों की तादाद	5	16	नमाज़ का बयान (क़याम)	19
3	वज़ू का बयान	6	17	रूकूअ़	25
4	वज़ू का त़रीक़ा	7	18	सजदह	28
5	वज़ू के बाद की दुआ़	8	19	जल्सा	30
6	वज़ू तोड़ने वाजी चीज़ें	9	20	जल्सा इस्तेराहत	31
7	मोज़ों पर मसह	9	21	पहला क़ाअ़दा	32
8	गुस्ल का बयान	10	22	आख़िरी क़ाअदा	35
9	तयम्मुम का बयान	11	23	फर्ज़ नमाज़ के बाद की दुआ़यों	40
10	तयम्मुम का त़रीक़ा	11	24	दुआ़ये क़ोनूत	43
11	अज़ान के कलिमात	12	25	जुमा की नमाज़	45
12	अज़ान का जवाब	14	26	ईदुलफित्र व ईदुलअज़हा	46
13	अज़ान के बाद की दुआ़यें	14	27	नमाज़ जनाज़ा	47
14	नमाज़ के औक़ात	16	28	सजदह सहव	48

Www.IslamicBooks.Website

अरकाने इस्लाम

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ो पर निर्भर (क़ाइम) है।

1. कलम-ए-शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू लाशरी-क-लहू

अनुवाद-मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पुजित (माबूद) नहीं। वह अकेला है उसका कोई साझी (शरीक) नहीं।

وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

व अश्हदु अन्न् मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

अनुवाद-और मैं गवाही देता हुँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

2. दिन और रात मे पाँच समय (वक़्त) नमाज़ क़ाइम करना (अदा करना)।

3. ज़कात देना ।

4. रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना।

5. अगर ख़र्च करने की ताक़त हो तो अल्लाह के घर (काबा) का हज करना।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़

अल्लाह तआ़ला ने हर मुसलमान मर्द (पुरुष) और औरत (स्त्री) पर (दिन और रात में) पाँच वक़्त (समय) नमाज़ें फर्ज़ की हैं।

(1) फज्र (2) ज़ोहर (3) अ़स्र (4) मग़रिब (5) ईशा

नमाज़ की रकअ़तों की संख्या (तादाद)

संख्या	नमाज़	फर्ज़ से पहले की सुन्नतें		फर्ज़	बाद की सुन्नें
		मोअक्कदह	ग़ैर मोअक्कदह		
1	फज्र	2	x	2	x
2	ज़ोहर	2+2	x	4	2
3	अस्र	x	2या2+2	4	x
4	मग़रिब	x	2	3	2
5	ईशा	x	2	4	2
1	जुमुआ़	2 तहियतुल मस्जिद		2	2+2
2	ईद	x		2	x

नमाज़े ईद बाज़ उलमा के नज़दीक फर्ज़ऐन और बाज़ उलमा के नज़दीक सुन्नते मुअक्कदह है।

वित्र सुन्नते मुअक्कदह है। (अबू–दाऊद,नसाई)

वित्र की रकअ़त की तादाद एक और तीन है। (मुस्लिम, अबु–दाऊद)

मुअक्कदह वह सुन्नतें हैं जिन पर हमारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम ने हमेशगी की है और पढ़ने की ताकीद फ़रमाई है।

Www.IslamicBooks.Website

वज़ू का बयान

1. दिल मे वजू की नीयत करें। (बुख़ारी)
2. वजू शूरू करने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ें। (अबू–दाऊद)
3. दोनों हाथों को गटटों (पहुँचों) तक तीन बार धोयें। (अबू–दाऊद)
4. दायें हाथ मे एक चुल्लू पानी लेकर आधे से कुल्ली करें और आधे को नाक मे चढ़ायें। (3 बार) (बुख़ारी)
5. तीन बार चेहरा धोयें और दाढ़ी में ख़िलाल करें। (बुख़ारी)
6. दायॉ हाथ केहुनी समेत तीन बार धोयें (बुख़ारी)
7. बायॉ हाथ केहुनी समेत तीन बार धोयें (बुख़ारी)
8. दोनों हथेलियों को पानी से तर करके (भिगो करके) पूरे सर का मसह करें।
   (दोनों हथेलियों को पेशानी से गुददी तक ले जायें और उसी तरह वापस लायें) (एक बार) (बुख़ारी)
9. एक बार दोनों कानों का अन्दर व बाहर से मसह करें।
   (शहादत की दोनों उंग्लियो से कान के अन्दर और अंगूठो से कान के बाहर मसह करें। (तिर्मिज़ी, नसाई)
   शहादत की दोनों उंग्लियों से कान के अन्दर अगुठों से कान के बाहर मसह करें।
10. दायें पैर को टख़नो (घुट्टियों) के साथ तीन बार धोयें (बुख़ारी)
11. बायें पैर को टख़नों के साथ तीन बार धोयें (बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

नोट–वज़ू करते समय कोई जगह खुश्क (सुखी) रह जाने पर (पानी न पहुंचे) पर वज़ू नही होगा। दोबारा वज़ू करना होगा।

वज़ू का त़रीक़ा

1

पहुचों तक हाथ धोने का त़रीक़ा

2

मुंह और नाक में एक साथ पानी डालने का त़रीक़ा

नाक झाड़ने का त़रीक़ा

3-1

चेहरा धोने का त़रीक़ा

3-2

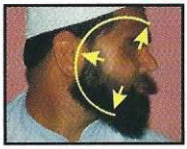

(दाएं कान किनारे से बाएं कान के किनारे तक)
(पेशानी के बाल से ठुडी तक)

3-3

दाढ़ी के खेलाल करने का त़रीक़ा

4

कोहनी तक हाथ धोने का त़रीक़ा

5

सर का मसह करने का त़रीक़ा (सामने से पीछे की तरफ़ और पीछे से सामने की तरफ़)

6

कान के मसह का त़रीक़ा

7

टख़नों तक पैर धोने का त़रीक़ा

Www.IslamicBooks.Website

वज़ू के बाद की दुआ

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू लाशरी-क-लहू

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पुजित (माअ़बूद) नहीं।

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अ़बदुहू वरसूलुहु

अनुवाद–और मैं गवाही देता हुँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। (मुस्लिम)

इस कलमा के साथ ये दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ

अल्लाहुम्मज अ़लनी मिनत्तव्वाबीना

وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

वज्अ़ल्नी मिनलमु-त-तहहिरीन

अनुवाद–ऐ अल्लाह : मुझे तौबा करने वालों और पाक साफ़ रहने वालों में से बना।

नोट : वज़ु करते वक़्त इस बात का ख़्याल करें कि कोई जगह सुखी न रह जाये। (तिर्मिज़ी)

Www.IslamicBooks.Website

वज़ू तोड़ने वाली चीज़ें

1. पेशाब, पाख़ाने के रास्ते से किसी भी चीज़ का निकलना। (बुख़ारी)
2. गहरी नींद से सो जाना। (तिर्मिज़ी)
3. ऊँट का गोश्त खाना। (मुस्लिम)
4. बेहोशी तारी होना, अ़क़्ल ख़त्म होना। (इजमा)
5. शरमगाह को छूना (कपड़े के बग़ैर हाथ लगाने से) (अबू–दाऊद, तिर्मिज़ी)

नोट: बैठे बैठे ओंघने से वज़ु नहीं टूटता।

मोज़ो पर मसह़

अगर वज़ू करने के बाद मोज़े पहने हों तो दोबारा वज़ू करते वक़्त पैरों को धोने के बजाय मोज़ों पर मसह़ कर सकते हैं।

1. वज़ू के वक़्त मोज़ों पर मसह करने की रुख़्सत है। शर्त है कि मोज़े वज़ू करने के बाद पहने गये हों। (बुख़ारी)

मोज़ों पर मसह़ इस तरह करें–

2. हाथ को पानी से भिगो कर मोज़ों के ऊपरी हिस्से पर मसह़ करें (अबू–दाऊद)
3. मुक़ीम आदमी (24 घंटों तक) एक दिन और एक रात तक मोज़ों पर मसह़ कर सकता है।
4. मुसाफ़िर आदमी तीन दिन और तीन रात तक मसह़ कर सकता है। (मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

स्नान (गूस्ल) का बयान

जिस्म पर पानी बहाने को स्नान कहते हैं।

1. पहले दिल मे स्नान की नीयत करें। (बुख़ारी)
2. फिर بِسْمِ اللّٰهِ बिस्मिल्लाह कह कर दोनो हाथों को गट्टों तक (गट्टों समेत) तीन बार धोयें। (बुख़ारी)
3. अगर जिस्म (बदन) पर कहीं गंदगी लगी हो तो उसको धोलें। (बुख़ारी)
4. फिर बायें हाथ को मिट्टी या साबुन से अच्छी तरह धोलें। (बुख़ारी)
5. वजू करें जिस तरह नमाज़ के लिये वजू किया जाता है। लेकिन दोनों पैर अभी न धोयें। (बुख़ारी)
6. सर पर पानी डालें यहाँ तक कि सर की जिल्द (बालों की जड़ तक पानी पहुंच जाये) तर हो जाये (पहले दायें त़रफ़ फिर बायें तरफ़ पानी डालें)। (बुख़ारी)
7. तमाम बदन पर पानी बहायें। (बुख़ारी)
8. अगर गुस्ल की जगह पर पानी जमा हो (रुका हो) तो गुस्ल की जगह से हट कर दोनों पैर धोयें। (बुख़ारी)
9. गुस्ल करने के बाद वही दुआ़ पढ़ें जो वजू के बाद पढ़ी जाती हैं।

Www.IslamicBooks.Website

तयम्मुम का बयान

तयम्मुम का माना क़स्द और इरादा है।

पाक मिट्टी से पाकी हासिल करने को तयम्मुम कहते हैं।

1. तयम्मुम वज़ू और गुस्ल का बदल है। (बुख़ारी)
2. बीमारी और पानी न मिलने की हालत मे पाक मिट्टी से तयम्मुम करें। (अल्माईदा 6)

तयम्मुम करने का त़रीक़ा

1. त़हारत (पाकी) की नीयत करने के बाद बिस्मिल्लाह कहें (बुख़ारी)
2. दोनों हाथों को एक बार पाक मिट्टी पर मारें। (बुख़ारी)
3. फिर दोनो हाथों पर फूकें। (बुख़ारी)
4. फिर अपने दोनों हाथों से पूरे चेहरे पर मसह़ करें (बुख़ारी)
5. दोनों हथेलियों के ऊपरी भाग (हिस्से) पर मसह़ करें। (बुख़ारी)

   (दायें हाथ से बायें हाथ के ऊपरी हिस्से पर और बायें हाथ से दायें हाथ पर। (बुख़ारी)
6. फिर वज़ू के बाद की दुआ पढ़ें।

Www.IslamicBooks.Website

अज़ान के कलिमात

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ	اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ
अल्लाहु अकबर ,अल्लाहु अकबर	अल्लाहु अकबर ,अल्लाहु अकबर

अनुवाद–अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ	اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह	अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं।

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ	اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ
अशहदु अन-न-मुहम्मदर रसूलूल्लाह	अशहदु अन-न-मुहम्मदर रसूलूल्लाह

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ	حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ
हय्या अलस्सलात	हय्या अलस्सलात

अनुवाद– आओ नमाज़ के लिये, आओ नमाज़ के लिये।

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ	حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ
हय्या अललफ़लाह	हय्या अ़ललफ़लाह

अनुवाद–आओ कामयाबी की तरफ़, आओ कामयाबी की तरफ़।

Www.IslamicBooks.Website

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
अल्लाहु अकबर ,अल्लाहु अकबर	लाइलाह इल्लल्लाहु

अनुवाद – अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं।

फज्र की अज़ान में حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ह़य्या अ़लल्फलाह़ के बाद दो बार اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ अस्सलातु ख़ैरूम्मेनन्नौम कहें।

(अबू–दाऊद)

अनुवाद– नमाज़ नींद से बेहतर है।

Www.IslamicBooks.Website

अज़ान का जवाब

अज़ान सुनने वाले को चाहिये कि वही अल्फ़ाज़ दोहराये जो मुअज़्ज़िन कह रहा है।
सिर्फ حَیَّ عَلَى الصَّلٰوةِ हय्या अलस्सलात और حَیَّ عَلَى الْفَلَاحِ हय्या अ़लल्फ़लाह़, के जवाब में لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ लाहौ–ल–वलाकुव्व–त–इल्ला बिल्लाह कहें। (मुस्लिम)

अज़ान के बाद की दुआएं

1. जब अज़ान का जवाब ख़त्म हो जाए तो दुरूदे इब्राहीमी (दुरूद शरीफ) पढ़ें। (मुस्लिम)
2. फिर ये दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ

अल्लाहुम्म रब–ब–हाज़ि हिददाव तित्ताम्मति वस्स लाति

الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَا ِۨالْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ

अल–क़ाइमति आति मुह़म्म–द–निलवसील–त वलफ़ज़ील–त–

وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَّحْمُوْدَا ِۨالَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ

वब्अ़स्हु मक़ामम मह़मू–द–निल्लज़ी वअ़त्तहू

अनुवाद– ऐ अल्लाह! इस मुकम्मल (पूरी) पुकार (अज़ान) खड़ी होने वाली नमाज़ के रब! मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) को मक़ामे वसीला और फ़ज़ीलत प्रदान (अता) कर और उनको मक़ामे महमूद प्रदान कर जिसका तूने वादा किया है। (बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

③ अज़ान के बाद ये दुआ भी पढ़ना चाहिये

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहो वहदहु लाशरीक लहू

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक (साझी) नहीं।

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

वअशहदु अन-न-मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बँव-व बिमुहम्मदिर-रसूलँव व बिल इस्लामि दीना।

अनुवाद– मैं अल्लाह के रब होने पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रसूल होने पर और इस्लाम के दीन होने पर प्रसन्न (खुश) हूँ। (मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ के औक़ात

1. **फ़ज्रः** सुबहे सादिक़ से सूरज निकलने तक। (मुस्लिम)
2. **ज़ुहरः** सूरज ढलने के बाद से अस्र की नमाज़ के वक़्त तक। (किसी चीज़ का साया उसके क़द के बराबर होने तक रहता है)
3. **अस्रः** ज़ुहर का वक़्त ख़त्म होते ही अस्र का वक़्त शूरु हो जाता है। किसी चीज़ का साया उसके क़द के बराबर हो जाये) अस्र का वक़्त शूरू होता है और सूरज के ज़र्द (पीला) होने तक रहता है। (मुस्लिम)
4. **मग़्रिबः** सूरज डूबने से शूरू होता है और शफ़क़ ग़ाइब होने तक रहता है। (मुस्लिम) (शफ़क़ः आसमान की लाली जो सूरज डूबने के बाद होती है)
5. **ईशाः** शफ़क़ ग़ाइब होने के बाद शूरू होता है और आधी रात तक रहता है। (मुस्लिम)
6. **ज़ुमआः** ज़ुहर का वक़्त है। (मुस्लिम)
7. **वित्रः** नमाज़े ईशा के बाद शुरु होता है और फ़ज्र की अज़ान तक रहता है।

Www.IslamicBooks.Website

इक़ामत के कलिमात

फ़र्ज़ नमाज़ खड़ी होने के वक़्त इक़ामत इस तरह कहनी चाहिए। इक़ामत के कलिमात एक एक मर्तबा कहना चाहिए। (बुखारी, मुस्लिम)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ	اَللّٰهُ اَكْبَرُ
अल्लाहु अकबर	अल्लाहु अकबर

अनुवाद– अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है,

اَشْهَدُ	اَنْ	لَّا اِلٰهَ	اِلَّا	اللّٰهُ
अशहदु अंल्लाइलाह इल्लल्लाह				

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं।

اَشْهَدُ	اَنَّ	مُحَمَّدًا	رَّسُوْلُ	اللّٰهِ
अशहदु अन-न-मुहम्मदर रसूलूल्लाह				

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ	حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ
हय्या अलस्सलात	हय्या अललफलाह

अनुवाद– आओ नमाज़ के लिये, आओ कामयाबी की तरफ़।

قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ	قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ
क़द क़ामतिस्सलात	क़द क़ामतिस्सलात

अनुवाद– तहक़ीक़ कि नमाज़ खड़ी हो गयी। तहक़ीक़ कि नमाज़ खड़ी हो गयी।

Www.IslamicBooks.Website

اَللّٰهُ اَكْبَرُ	اَللّٰهُ اَكْبَرُ
अल्लाहु अकबर	अल्लाहु अकबर

अनुवाद– अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

लाइलाह इल्लल्लाह

अनुवाद–अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

नोट–हर नमाज़ खड़ी होने से पहले इक़ामत कहनी चाहिये। इक़ामत के कलिमात एक एक बार कहना चाहिये।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ का बयान

1 क़ियाम

1. नमाज़ शुरु करने से पहले क़िब्लह की तरफ़ मूँह करके खड़े हों। (अल–बक़रह144)
2. दिल मे नमाज़ की नीयत करें। (बुख़ारी)

   (नीयत के अलफ़ाज़ ज़बान से अदा करना बिद्अत है।)
3. अपने दोनो हथेलियों को क़िब्लह की त़रफ़ करते हुए कन्धों या कानों की लौ के बराबर उठायें। (मुस्लिम)
4. اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अकबर कहें। (मुस्लिम)
5. और दायॉ हाथ बायें हाथ पर रख कर सीने पर बाधें। (अबु–दाऊद)

Www.IslamicBooks.Website

क़ियाम

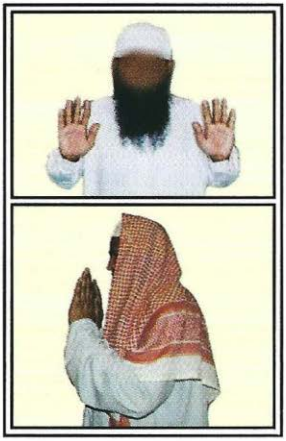

(रफ़उल यदैन)
(1) दोनों हाथों को उठाने का सहीह त़रीक़ा

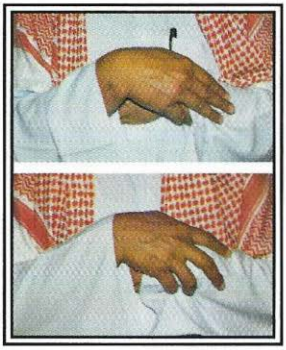

(2) सीने पर हाथ बांधने का सहीह त़रीक़ा

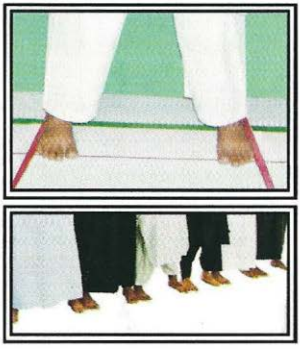

(3) खड़े रहने का सहीह त़रीक़ा

खड़े रहने का ग़लत़ त़रीक़ा

Www.IslamicBooks.Website

⑥ दुआ़ए सना पढ़ें

(दुआ़ए इस्तिफ्ताह पढें)

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِىْ وَبَيْنَ خَطَايَاىَ

अल्लाहुम्-म-बाइद बैनी व बैन-ख़तायाय

كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

कमा बाअत-त बैनल मशरिक़ि वलमग़रिबि

اَللّٰهُمَّ نَقِّنِىْ مِنْ خَطَايَاىَ

अल्लाहुम्म-नक़्क़िनी मिन ख़तायाय

كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ

कमा युनक्क़स-सौबुल-अबयज़ु मिनददनसि

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِىْ مِنْ خَطَايَاىَ

अल्लाहुम्मग़्सिलनी ख़तायाय

بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

बिलमाइ वस्सल्जि वल-बरदि।

अनुवाद—ऐ अल्लाह मेरे और मेरे पापों (अपराधों) के मध्य ऐसी दूरी कर दे जैसी तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी रखी है। जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह मेरे पापों (अपराधों) को पानी, बर्फ और ओले से धो दे।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

या यह दुआ़ पढ़ें

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ

सुबहान-कल्लाहुम्म व बिहम्दि-क- व तबारकस्मु-क

وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰہَ غَیْرُکَ

व तआ़ला जद्दु-क व लाइलाह गैरु-क।

अनुवाद—ऐ अल्लाह तू पवित्र (पाक) है, हर प्रकार की प्रशंसा (तारीफ) केवल तेरे ही लिये है, मैं तेरी प्रशंसा (तारीफ) के साथ तेरी पवित्रता (पाकी) बयान करता हूँ। और तेरा नाम बा बरकत है और तेरा मक़ाम (शान) बहुत ऊँचा है और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। (अबू—दाऊद, तिर्मीज़ी)

7 तअ़व्वुज़

तअव्वजु का माना (अर्थ) शैतान से पनाह माँगने को कहते हैं। शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह इन शब्दों में माँगनी चाहिये।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ

मिन हम्ज़िही व नफ्खिही व नफ्सिही

अनुवाद— मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शैतान मर्दूद से और (बूरे ख़्याल) से उसकी फूँक से और वसवसे से, फिर सूरहः फातिहा पढ़ें। (अबू—दाऊद, तिर्मीज़ी)

Www.IslamicBooks.Website

⑧ सूरह फातिहा पढ़ें

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अनुवाद– शूरु अल्लाह के नाम जो रहमान रहीम है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ○

अल्हमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन

अनुवाद– सब प्रशंसा (तारीफ़) अल्लाह तआला के लिये है जो सारे विश्व (जहानों) का रब (पालनहार) है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ ○

अर्रहमानिर्रहीम मालिकि यौ मिद्दीन

अनुवाद–जो रहमान (बड़ा दयालू) रहीम (बहुत रहम करने वाला) है। बदले के दिन का मालिक है।

اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ○

इया–क–नाबुदु व इया–क–नस्तईन

अनुवाद– हम तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और तुझ ही से सहायता (मदद) माँगते हैं।

اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ○

इहदि नस्सिरातल मुस्तक़ीम

अनुवाद– हमें सीधा रास्ता (पाथ–मार्ग) दिखा।

Www.IslamicBooks.Website

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

सिरातल्लज़ी-न-अनअ़म्त अ़लैहिम

अनुवाद–उन लोगों का रास्ता (मार्ग) जिन पर तूने उपकार (इनआ़म) किया।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمين

गैरिल मग्जूबे अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन

अनुवाद–उन लोगों का नहीं जिन पर तेरा गज़ब (प्रंकोप) हुआ और न गुमराहों का। (बुख़ारी)

(9) सूरह फातिहा पढ़ने के बाद (आमीन) कहें। (बुख़ारी)
आमीन का अर्थ है कि ऐ अल्लाह! तू कबूल फरमॉ।

(10) सुरह फातिहा पढ़ने के बाद कुरआन मजीद से जो भी सुरत या आयत याद हों उन में से कुछ पढ़ें। (बुख़ारी)

नोट–हर रकअत में सुरह फातिहा पढ़ना ज़रुरी है चाहे इमाम हों या मुक़्तदी (इमाम के पीछे पढ़ने वाले)। नमाज़ जेहरी हो या सिर्री।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम ने फरमाया:

لَاصَلٰوۃَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

अनुवाद–जिसने सूरह फातिहा नहीं पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

जेहरी नमाज़– उस को कहते हैं जो ऊचीं (बुलंद) आवाज़ से पढ़ी जाती है।

सिर्री नमाज़–उस को कहते हैं जो ऊचीं (बुलंद) आवाज़ से नहीं पढ़ी जाती है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

कुल हु वल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद

Www.IslamicBooks.Website

अनुवाद–आप कह दें–अल्लाह एक है, अल्लाह बे–न्याज़ है।

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

लम यलिद व लम यूलद वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद।

अनुवाद–न उससे कोइ पैदा हुआ और न ही वह किसी से पैदा हुआ और न ही उसका कोइ समकक्ष (हमसर) है।

(11) कोइ सुरह या कुरआन की कुछ आयात पढ़ने के बाद **अल्लाहु अकबर** कह कर रफ़उलयदैन (अपने दोनों हथेलियों को किब्लह की त़रफ़ करते हुए कन्धों या कानों की लौ के बराबर उठायें) करते हुए रुकूअ़ में जायें। (बुख़ारी)

2 रूकुअ़

(1) हथेलियों की उंग्लियों को फैला कर घुटनों को मज़बूती से पकड़ें। (बुखारी)
(2) केहुनियों को पहलुओं से अलग रखें।
(3) पीठ बिल्कुल सीधी रखें और सर को पीठ के बराबर रखें।
(4) दोनों हाथों को सीधा रखें।

5 रूकुअ़ की तसबीहात

कीसी भी एक तसबीह़ को कम से कम तीन बार पढ़ें:

(1) سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुबह़ा-न-रब्बियल अज़ीम

अनुवाद – पाक है मेरा अज़ीम रब।

Www.IslamicBooks.Website

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ②

सुबहा-न-क-अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दि-क-अल्लाहुम्मग़्फिरली

अनुवाद–ऐ हमारे रब! तू अपनी ह़म्द के साथ पाक है, ऐ अल्लाह! तु मुझे बख़्श दे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

रूकूअ

रूकूअ़ करने का सह़ीह त़रीक़ा

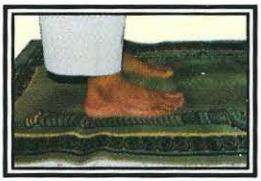

रूकूअ़ करने का ग़लत त़रीक़ा

Www.IslamicBooks.Website

6 फिर रफउलयदैन करते हुए और ये दुआ पढ़ते हुए रुकूअ़ से सर उठायें और य कहें।

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह

अनुवाद–अल्लाह तआ़ला ने उसकी सुनली जिसने उस की तारीफ़ की। (बुख़ारी, मुस्लिम)

3 क़ौमा

फिर सीधे खड़े हो जायें और ये दुआ़ पढ़ें–

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

अल्लाहुम-म-रब्बना व लकल ह़म्द

अनुवाद–ऐ अल्लाह हमारे रब तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ तेरे लिये हैं। (मुस्लिम)

या ये दुआ़ पढ़ें

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا

रब्बना व लकल ह़म्दु ह़म्दन कसीरन

طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

तय्येबम्मुबारकन-फ़ीह।

अनुवाद–ऐ हमारे रब! सारी तारीफ़ें तेरे ही लिये हैं, बहुत तारीफ़ें जो पाकीज़ह और बाबरकत हैं। (बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

4 सज्दह

1. हाथ को ज़मीन पर पहले रखते हुए सज्दह करें।
(इब्ने खुज़ैमा, अबु–दाऊद)
2. सज्दह सात अंग पर करें। (बुख़ारी)
(1) पेशानी व नाक (2,3) दोनों हथेलियाँ (4,5) दोनों घुटने (6,7) दोनों क़दम) (क़दम–दोनों पैर के पंजे को ज़मीन पर टिकाएं)
3. दोनों हथेलियों को खोल कर और उंग्लियों को मिला कर क़िबलह की त़रफ़ रखें। (अबु–दाऊद, ह़ाकिम)
4. दोनों हथेलियॉ कन्धों या कानों के बराबर ज़मीन पर रखे।
(अबु–दाऊद, तिर्मीज़ी)
5. पीठ को बिल्कुल सीधा रखें पीठ में टेढ़ापन न हो।
(अबु–दाऊद)
6. कदमों (दोनों पैर के पंजों को) खड़ा रखें। (मुस्लिम)
7. दोनों एड़ियों को आपस में मिलाकर रखें। (इब्ने खुज़ैमा)
8. पैर की उंग्लियों को मोड़ कर क़िबलह की त़रफ़ रखें।
(बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

सजदह

सजदह करने का सहीह त़रीक़ा

सजदह करने का ग़लत़ त़रीक़ा

औरतों के सजदह करने का ग़लत़ त़रीक़ा

Www.IslamicBooks.Website

⑧ सज्दह की दुआयें

किसी दुआ को कम से कम तीन बार पढ़ें।

① سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَىٰ

सुबहान रब्बियल आ़ला

अनुवाद – पाक है मेरा बुलन्द (महान) रब। (अबु दाऊद)

② سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ

सुबहानकल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक-अल्लाहुम्मग़फ़िरली

अनुवाद–ऐ हमारे रब! तू अपनी तारीफ़ (प्रशंसा) के साथ पाक है, ऐ अल्लाह तू मुझे क्षमा (बख़्श) दे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दह से सर उठायें और बैठ जायें।

नोट

मर्द और औरत के सज्दे में कोइ फर्क़ नहीं है और न ही किसी सही हदीस से औरत के सज्दे की अलग कैफियत साबित है।

5 जल्सा

① बायें कदम (पैर) को बिछा कर उस पर बैठें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

② दोनों हथेलियों को घुटनों या रानों पर रखें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

③ दायें पैर को इस तरह खड़ा करें कि उंग्लियॉ क़िब्ले की त़रफ़ हो। (बुख़ारी, नसई)

Www.IslamicBooks.Website

④ जल्सा की दुआ

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ	رَبِّ اغْفِرْ لِيْ
रब्बिग़्फ़िरली	रब्बिग़्फ़िरली

अनुवाद–ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे, ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दें।
(नसई, अबु–दाऊद, इब्ने माजा)

⑤ **अल्लाहु अकबर** कह कर दुसरे सज्दह के लिये जायें।
(बुख़ारी)

⑥ दुसरा सज्दह पहले सज्दह की तरह करे।

⑦ **अल्लाहु अकबर** कहकर सज्दह से सर उठायें और बैठ जायें।

6 जल्स-ए-इस्तराहत

① आराम से बैठें, जिस तरह पहले सज्दह के बाद बैठे थे। (बुख़ारी)

② और दुसरी रकअ़त के लिये हाथों को ज़मीन पर टेकते हुए खड़े हो जायें। (बुख़ारी)

③ दूसरी रकअ़त भी पहली रकअ़त की तरह पढ़ें।
(बुख़ारी, मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

7 पहला काअ़दह (तशहहुद)

1. पहले काअ़दह में इस तरह बैठें जिस तरह जल्सह में बैठे थे। (बुख़ारी, मुस्लिम)
2. दायें हाथ के अंगुठे को बीच की उंगली पर इस तरह रखें कि अंगुठा शहादत की उंगली की जड़ के बिल्कुल करीब हो या बीच की उंगली के साथ अंगूठे से हल्क़ा बनायें।
3. या बाक़ी सब उंग्लियों को बन्द और शहादत की बुलन्द (उठाकर) करके उसे थोड़ा हरकत देते रहें। (मुस्लिम)
4. शहादत की उंगली को बुलन्द करके उसे हरकत दें।

5 तशहहुद की दुआ

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ

अत्तहीय्यातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु

अनुवाद– ज़बान, बदन और माल की तमाम इबादतें अल्लाह के लिये हैं।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अस्सलामु अ़लै-क अय्युहन्नबीयो व रहमतुल्लाहि व-ब-रकातुहु

अनुवाद – ऐ नबी! आप पर अल्लाह की सलामती हो और उसकी रह़मत और बरकतें हों।

Www.IslamicBooks.Website

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ عَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ

अस्सलामु अ़ल्लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन

अनुवाद–सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अशहदु अल्लाइला-ह-इल्लल्लाहु

अनुवाद–मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत (उपासना) के लाइक नहीं।

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

व अशहदु अन्न-मुहम्मदन अब्दुहू व-र-सूलुहू।

अनुवाद–और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

8 फिर दरुद शरीफ पढ़ें (अबु अवाना, नसाई)

नोट–पहले क़ाअ़दह के बाद रफउलयदैन करते हुए तीसरी रकअ़त के लिये खड़े हों। (बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

पहला क़ाअ़दह

जलसा-ए-इसतिराहत और तशह्हुद में
बैठने का सहीह त़रीक़ा

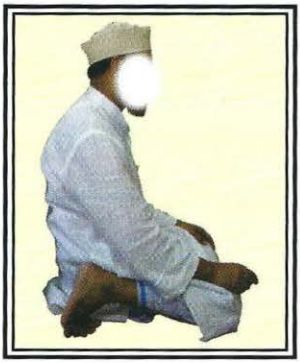

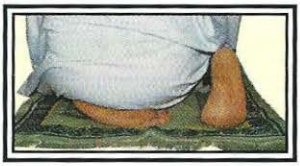

जलसा-ए-इसतिराहत और तशह्हुद में
बैठने का ग़लत़ त़रीक़ा

Www.IslamicBooks.Website

आख़िरी काअ़दह

1. आख़िरी काअ़दह में बैठने का त़रीक़ा पहले क़ाअ़दह, जल्सह और जल्सा–ए–इसतिराहत से अलग है।
2. बायाँ कूल्हा ज़मीन पर रख कर बैठें।
3. बायाँ पैर दायें त़रफ़ निकाल कर (पसारे) बिछाये रखें। दायें पैर को खड़ा रखें।
4. उंग्लियों का रुख़ किबलह की त़रफ़ हो।
5. हथेलियों को उसी तरह रखें जिस तरह पहले क़ाअ़दह में रखा था।
6. शहादत की उंगली से इशारह भी करें। (बुख़ारी)

Www.IslamicBooks.Website

क़ाअ़दह अख़ीरा

क़ाअ़दह अख़ीरा में बैठने का सहीह त़रीक़ा

क़ाअ़दह अख़ीरा में बैठने का ग़लत़ त़रीक़ा

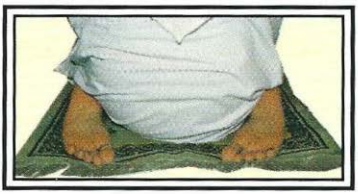

Www.IslamicBooks.Website

(7) आख़िरी क़ाअ़दह की दुआएं

(1) अत्तहीयात पढ़ें।

(2) दरुद शरीफ़ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्म-सल्लि अ़ला मुह़म्मदिँव्वअला आलि मुह़म्मद

अनुवाद –ए अल्लाह! रह़मत नाज़िल कर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुहम्मद की आल (सन्तान) पर,

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

कमा सल्लै- त अ़ला इब्राहीम-व-अ़ला आलि इब्राहीम

اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

इन्न-क-ह़मीदुम्मजीद,

अनुवाद–जिस तरह तूने रह़मत भेजी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इब्राहीम की औलाद (सन्तान) पर बेशक तू प्रशंसा योग्य बुजुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम-म-बारिक अ़ला मुह़म्मद, व अ़ला आलि मुह़म्मद

अनुवाद– ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फरमां मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुह़म्मद की आल (सन्तान) पर,

كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

कमा बारक-त-अ़ला इब्राहिम व-अ़ला आलि इब्राहिम

Www.IslamicBooks.Website

إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

इन्न-क हमीदुम्मजीद। (बुख़ारी)

अनुवाद–जिस प्रकार से तूने बरकत नाज़िल फरमाइ इब्राहिम पर। और इब्राहीम की औलाद (सन्तान) पर,बेशक तू प्रशंसा योग्य बुजुर्गी वाला है।

3

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म-इन्नी अऊज़ु बि-क-मिन अज़ाबिल्कबरे

अनुवाद – ऐ अल्लाह! मैं कब्र के कष्ट (अज़ाब) से तेरी पनाह माँगता हूँ।

وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

व-अऊज़ोबि-क-मिन फितनतिल मसीहिद दज्जालि

अनुवाद–और मसीहुद दज्जाल के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

व-अऊज़ु बि-क-मिन फितनतिल महया वल्-ममाति

अनुवाद–और ज़िदगी और मौत के फितने से पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम्म-इन्नी अऊज़ुबिक-मिनल माश्मे वल्मगरम।

अनुवाद–ऐ अल्लाह! मैं गुनाह और कर्ज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ।

Www.IslamicBooks.Website

4

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِیْرًا وَّلَا

अल्लाहुम्मा-इन्नी ज़लम्तु नफसी जुल्मन कसीरंव्वला

يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

यग़फ़ि रुज़्ज़ुनू-ब-इल्ला अन-त

فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ

फग़्फ़िर्ली मग़्फ़िरतम मिन इन्दिक-वरहम्नी

اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

इन्न -क- अन्तलग़फ़ूर्रहीम। (बुख़ारी)

अनुवाद– ऐ अल्लाह! मैं ने अपने नफ़्स (जान) पर बहुत अत्याचार (ज़ूल्म) किया और तेरे सिवा कोई गुनाहों को क्षमा (माफ़) नहीं कर सकता अतः तूही मुझे क्षमा कर मुझ पर दया (रहम) फरमा बेशक तू ग़फ़ूर (क्षमा करने वाला) रहीम (दया करने वाला) है।

5

दुआ के बाद पहले दायें और फिर बायें चेहरा मोड़ते हुये।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह कहें। (मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली दुआएँ

1. सलाम फेरते ही एक बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ **अल्लाहु अकबर** कहें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

2. फिर तीन बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ **अस्तग़फ़िरुल्लाह** कहें। (मुस्लिम)

3. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ

अल्लाहुम-म-अन्तस्सलामु-व-मिनकस्सलामु

अनुवाद–ऐ अल्लाह! तू सलाम है और तुझ ही से सलामती है।

تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तबारक-त या ज़ल्जलालि वल इकरामी। (मुस्लिम)

अनुवाद–रब तू बड़ी बरकत वाला है, ऐ इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाले।

4. رَبِّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ

रब्बि अइन्नी अला ज़िक्रि-क -व शुक्रि-क

وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

व हुस्ने इबादतिक

अनुवाद–ऐ मेरे रब! मेरी सहायता (मदद) कर तेरे ज़िक्र और शुक्र करने पर और तेरी अच्छी तरह इबादत करने पर। (नसाई)

5. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

लाइलाह इल्ललाहु वहदहू ला शरी-क-लहू

अनुवाद–अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं।

Www.IslamicBooks.Website

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लहुलमुल्कु व लहुलहम्दु व हु-व-अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

अनुवाद– उसी के लिये बादशाहत (राज्य) है और उसी के लिये सब प्रशंसा है, और वह हर चीज़ (वस्तु) पर क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ

अल्लाहुम-म-लामानिअ़-लिमा आतै-त-वला मुअ़ति-य लिमा मनअ़-त

अनुवाद–ऐ अल्लाह! जिसको तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं,

وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

वला यन्फ़अु ज़ल जद्दि मिनकलजद-दु। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनुवाद–और दौलत वाले को उसकी दौलत तेरे अ़ज़ाब से लाभ (छुटकारा, फाइदा) नहीं देगी।

⑥ तसबीहात पढ़े

سُبْحَانَ اللّٰهِ सुबहानल्लाह (33 बार)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अल्हम्दुलिल्लाह (33 बार)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अकबर (33 बार)

और एक बार यह पढ़ें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ

लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहु लाशरी-क-लहू लहुलमुल्कु

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

व लहुलहम्दु व हु-व-अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

Www.IslamicBooks.Website

⑦ आयतल कुर्सी

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हुव, अलह़य्युल क़य्युम

अनुवाद–अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं, वह सदा जीवित रहने वाला सबको क़ाइम रखने वाला है।

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ

ला ताख़ुज़ुहु सिनतुव्वला नौम

अनुवाद– न उसको ओंघ आती है न नींद,

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ

लहु मा फिस्समावाति वमा फिल अर्ज़ि

अनुवाद–आकाशों और पृथ्वी मे जो कुछ है सब उसी का है,

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ

मन ज़ल्लज़ी यश्फ़उ इन्दहू इल्ला बि इज़्निही

अनुवाद–कौन है जो उसकी आज्ञा (एजाज़त) के बिना उसके पास किसी की सिफारिश कर सके,

یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ

याअ़लमु माबै-न-ऐदीहिम वमा ख़ल्फहुम

अनुवाद–वह जानता है जो कुछ लोगों के सामने है। और जो कुछ उनके पीछे है,

وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ

वला युह़ीतू-न बिशैइम-मिन इल्मिही इल्ला बिमाशाअ

Www.IslamicBooks.Website

अनुवाद–और लोग उनके ज्ञान में से कुछ घेर नहीं सकते परन्तु जितना अल्लाह चाहे,

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

वसिअ़ कुरसीयुहुस्समावाति वल अर्ज़

अनुवाद–उस की कुरसी की वुसअ़त ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है।

وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

वला यऊदुहू हिफज़ुहुमा व हुवल अ़लीयुल अज़ीम

अनुवाद–और अल्लाह तआ़ला उन की हिफाज़त से न ही थकता है और न ही उकताता है और वह बलन्द अ़ज़मत वाला है। (अल–बकरा 225)

दुआ़ए कुनूत

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ

अल्लाहुम्महदिनी फीमन हदैत

अनुवाद–ऐ अल्लाह! मुझे हिदायत देकर उन लोगों मे शामिल फरमां जिन्हें तूने हिदायत से नवाज़ा।

وَعَافِنِيْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِيْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ

व आफिनी फीमन आ़फैत व तवल्लनी फीमन तवल्लैत

अनुवाद–और मुझे आफीयत देकर उन लोगों में शामिल फरमां जिन्हें तुने आफीयत बख़्शी और जिन लोगों को तुने अपना दोस्त बनाया है उन में मुझे शामिल फरमाकर अपना दोस्त बनाले।

Www.IslamicBooks.Website

وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَعْطَيْتَ وَقِنِيْ شَرَّمَا قَضَيْتَ

व बारिकली फीमा आतैत व क़िनी शर्रमा क़ज़ैत

अनुवाद–जो कुछ तुने मुझे अता फरमाया है उस में बरकत अता फरमा और जिस बुराइ का तुने फैसला फरमाया है। उस से मुझे महफुज़ रख।

فَاِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ

फइन्न-क-तक़्ज़ी वला युक्ज़ा अ़लैक

अनुवाद– बेशक तू फैसला करता है और तेरे विरुद्ध (ख़िलाफ़) किसी का आदेश नहीं चल सकता,

اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ [2] وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ

इन्नहू लायज़िल्लु मन्वलैत वला यइज़्ज़ु मन अ़दैत,

अनुवाद–कोई शक नहीं की तू जिसका सहयोगी है वह ज़लील (रूसवा) नहीं हो सकता और उसे कोई इज़्ज़त सम्मान नहीं दे सकता जिसे तू दुशमन बनाले।

تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ [3] وَلَا مَنْجَا مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ

तबारक-त-रब्बना वतआ़लैत वला मन्जा मिन्क इल्ला इलैक

अनुवाद–ऐ हमारे रब तू बरकत वाला है और बलन्दी वाला है, (अबू दाऊद, अहमद इब्ने खोज़ैमा)

और फिर, وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ **वसल्लल्लाहु अलन्नबी**, पढ़े

अनुवाद–और दरुद नाज़िल हो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर। (तिर्मिज़ी, इब्ने खोज़ैमा)

(दुआ़ए कुनूत वित्र (वितर) की आख़िरी रकअ़त में रुकूअ से पहले या बाद में पढ़ सकते हैं।

Www.IslamicBooks.Website

जुम्आ़ की नमाज़

1. हर बालिग़ व अकलमन्द मर्द (पूरुष) मुसल्मान पर जुम्आ़ की नमाज़ जमाअत के साथ फर्ज़ है।
2. जुम्आ़ के दिन स्नान करें पाक व साफ(अच्छे) कपड़े पहनें और खुशबू लगाकर मस्जिद जायें, (बुख़ारी)
   नोट–जूम्आ़ का स्नान हर बालिग़ पर वाजिब (ज़रुरी) है।
3. जुम्आ़ के दिन खुतबा शुरु होने से पहले मस्जिद पहुँचने का ज़ियादह सवाब् है। (बुख़ारी, मुस्लिम)
4. मस्जिद में आने के बाद दो रकअ़त तहियतुल मस्जिद पढ़े बिना न बैठें। चाहे खुतबा शूरु होजाये तो भी। (मुस्लिम)
5. खुतबा शूरु होने के बाद बात करना या इशारा करना मना है। (बुख़ारी, मुस्लिम)
6. लोगों की गर्दनें फलाँग कर आगे जाने की कोशिश न करें। (बुख़ारी)
7. अगर किसी शरइ उज़्र की वजह से जुम्आ़ की नमाज़ छूट जाए तो ज़ुहर की नमाज़ पढ़े।
8. जुम्आ़ के दिन **सुरतूल कहफ** पढ़ने की फज़ीलत है। (अबूदाऊद)
9. जुम्आ़ के दिन रसुलुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ियादह से ज़ियादह दरुद पढ़ना चाहिये। (अबू–दाऊद)
10. दरुद के अलफाज़ (दरुद इब्राहिमी) कहें (जो नमाज़ में पढ़ते हैं) और सबसे मुख़्तसर दरुद **सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** है। صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

Www.IslamicBooks.Website

ईदुलफित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़

1. ईदुलफित्र की नमाज़ से पहले सदक़–ए–फित्र अदा करें
2. ईदैन की नमाज़ (ईद और बक़रईद) की नमाज़ खुले मैदान में पढ़े। (बुख़ारी)
3. ईदैन की नमाज़ से पहले कोई सुन्नत और नफ़िल नमाज़ न पढें। (बख़ारी)
4. ईद की नमाज़ दो (2) रकअ़त और बारह (12) तकबीरें ज़ाइद (अधिक) के साथ है।
5. पहली में तकबीर तहरीमा के बाद सात (7) तकबीरें ज़ाइद कहें।
6. दुसरी रकअ़त मे किरअ़त से पहले पाँच जाइद (अधिक) तकबीरें कहें। (अबु–दाऊद)
7. नमाज़ के बाद का खुतबा सुनें।
8. ईदगाह एक रास्ते से जायें और दूसरे रास्ते से वापस आयें। (बुख़ारी)
9. औरतों (स्त्रियों) को भी ईदगाह में जाना चाहिए। (बुख़ारी)
10. ईदगाह जाते हुए बलन्द (तेज़) आवाज़ से ये तक्बीर कहें। (इबने अबीशैबा)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर लाइलाह इल्लल्लाहु

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल हम्द

अनुवाद–अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है,अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूजित (माबूद) नहीं। और अल्लाह सबसे बड़ा है, और अल्लाह सबसे बड़ा है, और तमाम प्रशंसा केवल अल्लाह ही के लिए है।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े जनाज़ह

नमाज़े जनाज़ह में चार तकबीरें हैं। (तअव्वुज़ पढ़कर)

1. पहली तकबीर के बाद सुरह फातिहा और कोई सूरत पढ़े।
2. दुसरी तकबीर के बाद दरुद शरीफ पढ़े।
3. तीसरी तकबीर के बाद जनाज़ह की दुआ पढ़े।
4. चौथी तकबीर (अल्लाहु अकबर) के बाद सलाम फेरें। (बुख़ारी, नसई)

जनाज़ह की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا

अल्लाहुम्मग़्फिर लिहय्यिना व मैय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना

अनुवाद–ऐ अल्लाह! क्षमा कर दे हमारे जीवितों,और मुरदों कों, हमारे हाज़िर और गाइब को।

وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا

व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क-रिना व उनसाना

अनुवाद– और छोटों और बड़ों को और हमारे पुरुषों और स्त्रियों को।

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ

अल्लाहु-म-मन अहयैतहू मिन्ना फ अहयेही अ़लल् इस्लामि

अनुवाद–ऐ अल्लाह हम में से जिसको तू जीवित रखे उसको इस्लाम पर जीवित रखे।

وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

व मन तवफ्फैतहू मिन्ना फतवफ्फहू अलल् ईमानि

अनुवाद–और हम में से जिसको तू मौत दे उसका अन्त ईमान पर हो।

Www.IslamicBooks.Website

اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ

अल्लाहुम-म-ला तहरिम्ना अजरहू वला तफ्तिन्ना बादहू

(इब्ने हिब्बान, हाकिम)

अनुवाद–ऐ अल्लाह उसके अज्र–व–सवाब् (बदला) से हमको महरुम (निराश) न करना और इसके बाद फितने मे न डालना

सजदह सह्व

① सह्व भूल चूक को कहते हैं।
② सह्व के दो सजदे होते हैं।
③ सजदह सह्व तीन सूरतों में किया जाता है।
1–रकअ़त के कम या ज़ियादह होने पर (कमी को पूरा करने के बाद) (बुख़ारी, मुस्लिम)
2–पहला क़अ़दह (तश्हहूद) या किसी वाजिब के भूलने पर। (अहमद, अबू–दाऊद)
3–शक होने पर (यकिन पर भरोसा करने के बाद) (बुख़ारी, मुस्लिम)
नोट–अगर शक हो कि हमने तीन (3) रकअ़त पढ़ी है या चार (4) तो तीन पर यकीन करे फिर एक रकअ़त और पढ़कर सजदए सह्व करके सलाम फेरें।
④ सजदए सह्व सलाम फेरने से पहले या बाद मे करें दोनों तरह कर सकतें हैं।
⑤ सलाम फेरने के बाद अगर सजदए सह्व किया जाता है तो सजदए सह्व करने के बाद दुसरी बार फिर सलाम फेरेंगे। (बुख़ारी, मुस्लिम)
⑥ सजदए सह्व की वही दुआ़ है जो सजदे मे पढ़ी जाती है।
⑦ क़िरअ़त के भूलने पर सजदए सह्व नहीं है।
⑧ इमाम के भूलने पर सजदए सह्व है मुक़्तदी (इमाम के पीछे पढ़ने वाले) के भूलने पर सजदए सह्व नहीं है।

Www.IslamicBooks.Website

मन्हज-ए- सलफ सालेहीन
के फरोग़ के लिये कोशाँ

हमारी अन्य अहम खूबसूरत और मालूमाती पुस्तकें

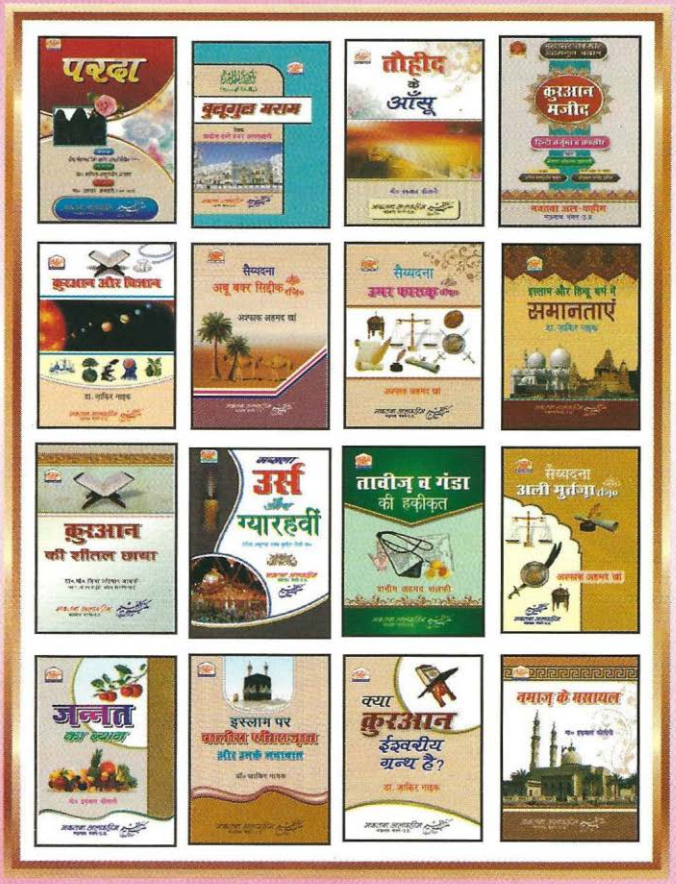

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
Facebook: maktabaalfaheem

₹ 50/-

Www.IslamicBooks.Website